

संक्षिप्त खबरें

उधना ले जा रहे तीन बातों
बारामद, एक गिरफ्तार

दानापुर। खगोल रेल थाना के
अंतर्गत लोटपार्क नंबर 1 से
नावालिक बच्चों को बहला-

कुसलाकर मजदूरी कराने वाले से
युजरात ले जा रहे एक व्यक्ति को
तीन बच्चों को बारामद किया गया

है। जनकारी के अनुसार बचपन

बच्चों और आनंदोलन के द्वारा

आरपात्र की नावालिक बच्चों

को मजदूरी कराने के लिए उठाए

उधना, युजरात जाने वाली ट्रेन से
ले जाया जा रहा है। बचपन

बच्चों और आनंदोलन के स्टाफ एवं

सहमें हुए तीन नावालिक बच्चे

बारामद करते हुए एक व्यक्ति को
गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार

व्यक्ति की कठिनाई

काठिनाई का टाइटर का रहने वाली

कूमार है। आरपात्र का कूमारी

प्रक्रिया के लिए आरपात्र व्यक्ति व

बच्चों को जी आरपात्र को सुपुर्द

किया गया।

जदू या ग्रामीण कार्यकर्ता

सम्मेलन पूरी तरह पलांप राजद

नेता पलांटन सिंह

मरोड़ी राजद नेता पलांटन सिंह

ने शनिवार को संघन जदू का

ग्रामीण कार्यकर्ता सम्मेलन को

पलांप कराना दिया है और कहा

है कि सम्मेलन में कार्यकर्ताओं

की व्युत्तम भागीदारी यह

दशाती है। इससे प्रमाणित होता

है कि मुख्यमंत्री जी का

विद्यारथी जो पहले था वह

धोवरा द्वारा नेता आरपात्र

वाले शनिवार सभा बच्चों को जदू

का इन इलाकों में पूरी तरह से

आधार दिसक चुका है। बिहार

सरकार के मंत्रियों की

उपस्थिति के बाबजूद मैदान में

आये पहले से जोड़ व्युत्तम

जनतान कार्यकर्ता ओं को उत्तम

जनरही दिसाई पड़ रही

है। किंतु इसके बाबजूद व्युत्तम

कार्यकर्ताओं को भी भी उत्तम

प्रक्रिया के साथ कार्यकर्ता

जदू की व्युत्तम जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

जनरही दिसाई परिवर्तन होता

है। इसके बाबजूद जनरही दिसाई

परिवर्तन होता है। इसके बाबजूद

फंदे के आकार की गर्दन ढूँढने की कवाइद

पर यहाँ कोना चाहिए कि नाम व्याधीश अनुलूप बनेता है। लोकों ने इसी उत्तरदायी लोक सेवकों ने कठबैंधों को खालिये पर रखकर अधिकारों का मनमाना उपयोग शुरू कर दिया है। बैंगलुरु के इंजीनियरिंग अतुल सुभाष की आत्महत्या ने पुलिस से लेकर कानून व्यवस्था तक को कटघरे में खड़ा कर दिया है। न्यायाधीश पर रिश्वत की मांग के आरोप लगाते हुए अतुल ने उनके पेशकार को भी रेखांकित किया है जिनका नाम न्यायाधीश रीतांशु कौशिक तथा पेशकार माधव बताया जाता है। पुलिस व्दारा पक्षपात्र करने से लेकर तानाशही तक के अनेक पक्ष उजागर हए हैं। महिलाओं के पक्ष में हमेशा आन्दोलन करने वाली राजनीतिक पार्टीयां, समाजसेवी संगठन और कथित बुद्धिजीवियों की जमात अतुल को न्याय दिलाने के लिए पूरी ताकत से सड़कों पर नहीं उत्तरी, नारे नहीं लगे और न ही विपक्ष ने धरना-प्रदर्शन ही किये। तटीकरण की राजनीति करने वालों ने मीडिया के पछ्ने

संविधान पर बहस में सब कुछ तहस-नहस

परंतु इस पर का वाच्यान का अवयव कहना कठिन जो साकृत का ग्रन्थ वह हक्का है।
कांग्रेस ने यदि संविधान के बाहर जाकर काम करने की कोशिश की तो जनता ने कांग्रेस व
सत्ता से बाहर का यात्ता दिखा दिया और यदि यही गलती भाजपा करेगी तो उसे भी सत्ता से बाहर
जाना ही पड़ेगा। साम, दाम, दंड और भेद एके सीमा तक ही काम आते हैं। देश के लिए एक देश
एक घुनाव उतना आवश्यक नहीं है जितना कि एक देश एक दाम आवश्यक है। देश में किसान
की फसल के दाम का मामला हो या देश के बेरोजगारों को रोजगार दिलाने का मामला एकसाथ
घुनाव करने से ज्यादा महत्वपूर्ण है। सरकर और सरकारी पार्टी बार-बार मंटिर-मण्डिगद करते
देश की समस्याओं से बचकर नहीं निकल सकती।



राक्षस अचल लेखक

CII

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी का उत्तर सुनकर समझा में आ गया कि उन्होंने संघ की शाखा में संविधान के बारे में जो कुछ पढ़ा-लिखा उससे ज्यादा वे संविधान के बारे में जानते नहीं हैं। संविधान पर बहस के दौरान उठाये गए एक भी सवाल का उत्तर देने के बजाय वे अपने सिर पर सवार जबाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के भूत को बिदारते नजर आये। वे नहीं बता पाए कि उनके युग में संविधान कैसे मजबूत हो रहा है? मैं माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी के भाषण को दृष्ट-चित्त होकर सुनता हूँ। शनिवार को भी मैंने उन्हें लोकसभा में सुना। वे प्रधानमंत्री के स्तर का भाषण देने में हमेशा की तरह विफल हुए, उन्होंने संविधान पर भाषण देते समय संविधान पर अपने गहन अध्ययन का प्रदर्शन करने के बजाय सिर्फ वो सब उद्घाटित किया जो संघ की शाखाओं में दाक्षता किया जा रहा है। मोदी जी सध के प्रचारक हैं ये हकीकत है लेकिन वे देश के प्रधानमंत्री हैं इसलिए उन्हें शाखाओं के ज्ञान से ज्यादा सिखने की जरूरत है। उन्हें देश को बताना चाहिए था कि पिछले दस साल में उनकी सरकार में संविधान की रक्षा के लिए क्या कदम उठाये? संविधान संशोधनों को लेकर माननीय मोदी जी ने पिछली सरकारों के कामकाज को संविधान के साथ खिलवाड़ बताया, लेकिन जोर देकर कहा कि उनकी सरकार ने संविधान के साथ जो भी किया तो डके की चोट किया। यानि वे परोक्ष रूप से कह रहे हैं कि -वे करें तो करेकर ढीला, हम करें तो रास लीला। संविधान के साथ किस पार्टी और सरकार ने खिलवाड़ किया थे पूरा देश जानता है। कांग्रेस ने आपातकाल लगाया थे सभी को पता है। मोदी जी कहते हैं कि आपातकाल का कलंक कांग्रेस के माथे से कभी मिट किए इस दश का जनता न, विपक्ष का खिचड़ी जनता सरकार के विरने के बाद मशीन और मशीनरी के बिना हुए आम चुनाव में कांग्रेस को विजय श्री देकर इस कलंक को मिटा दिया था। मेरा वह विश्वास है कि मोदी जी जब तक प्रधानमंत्री रहेंगे तब तक उनके सिर से जवाहर लाल नेहरू का, इंदिरा गांधी का, राहुल गांधी का यहां तक की राहुल गांधी का भूत उत्तरने वाला नहीं है और जब तक ये भूत उनके सर पर सवार रहेगा वे न चैन से काम कर पाएंगे और न संविधान के विधान को समझ पाएंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी देश को आश्वस्त नहीं कर पाए कि उनके लिए संविधान बड़ा है या मनु स्मृति? वे ये स्पष्ट नहीं कर पाए कि उन्हें धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद शब्द से तकलीफ है या नहीं? वे ये भी नहीं बता पाए की संविधान को लेकर वीर सावरकार साहब जो सोचते थे, क्या वे का उत्तर देन के बजाय जम्मू-कश्मर से धारा 370 हटाने को ही अपनी सबसे बड़ी संविधान की सेवा बताते हुए नहीं थकते। संविधान का सम्मान करना और संविधान की धज्जियां करना दो अलग-अलग काम हैं। मौजूदा सरकार ने पिछले एक दशक में संविधान की सेवा किस तरह से की है, देश और दुनिया जानती है। जम्मू-कश्मीर से राज्य का दर्जा छीना, मणिपुर को ढेढ़ साल से अनाथ छोड़ना संविधान की सेवा नहीं है। देश में अल्पसंख्यक समाज को आरंकित करना, उन्हें लक्ष्य बनाकर बुलडोजर दौड़ा देना संविधान की सेवा नहीं है। तमाम मंदिरों-मस्जिदों की खुदाई का अधियान चलाना संविधान की सेवा नहीं है। संविधान समदृष्ट है, लेकिन सरकार नहीं है कि सरकार के पास इतनी ताकत नहीं है कि वो विरासत में मिले संविधान को बदल सके। संसद में मानीयों के भाषण से ये जाहिर हो गया है कि आज की सरकार नहीं है। सरकार लगातार हिन्दू-मुसलमान का खेल खेलती आ रही है। सोमवार को राज्य सभा में भी यदि संविधान पर बहस हुई तो आप तय जा के भाषण का ही दहराएंग। विसमान ये है कि संविधान को लेकर ढींग हांकने वाले लोग वे हैं जिनकी मात्र संस्थाओं का, पूर्वज नेताओं का देश के संविधान के नियम में कोई योगदान नहीं रहा। वे तो दूसरे तरह का संविधान चाहते थे। यानि आज का संविधान आज की सरकार के मन का संविधान नहीं है। संविधान की प्रस्तावना ही आज की सरकार को पसंद नहीं है। आज की सरकार को पूर्व की सरकारों द्वारा किये गए संशोधन पसंद नहीं है। संसद में संविधान की प्रति का लहराना पसंद नहीं है, लेकिन दुर्भाग्य ये है कि सरकार के पास इतनी ताकत नहीं है कि वो विरासत में मिले संविधान को बदल सके। संसद में मानीयों के भाषण से ये जाहिर हो गया है कि आज रही तो भाजपा कौन से एक किताब है, लेकिन कोई भी संविधान में लिखे विधान का अनुशरण करना नहीं चाहता। एक दश, एक चुनाव के सरकार देश में एक विधान एक भाषा, एक धर्म नेता के सिद्धांत पर आ है। केंद्र सरकार का ही सांविधान के खिलाफ है। प्रधानमंत्री जी के संविधान के प्रति आस्तीन अनुमान लगाया जाए जी की तकलीफ है वे भूल जाते हैं कि उन्हें आडवाणी को धकियां बनाया था। यानि वो ही आज भी हो रहा है अपनी पार्टी के संविधान के बजाय जो राज्य सभा में भी यदि विधान का धज्जियां उत्तराधिकार तक लाए जाएं तो आप तय

का उत्तर दन के बजाय जम्मू-कश्मीर सधारा 370 हटाने को ही अपनी सबसे बड़ी संविधान की सेवा बताते हुए नहीं थकते। संविधान का सम्मान करना और संविधान की धर्जियां करना दो अलग-अलग काम हैं। मौजूदा सरकार ने पिछले एक दशक में संविधान की सेवा किस तरह से की है, देश और दुनिया जानती है। जम्मू-कश्मीर से राज्य का दर्जा छीनना, मणिपुर को डेढ़ साल से अनाथ छोड़ना संविधान की सेवा नहीं है। देश में अल्पसंख्यक समाज को आतंकित करना, उन्हें लक्ष्य बनाकर बुलडोजर दौड़ा देना संविधान की सेवा नहीं है। तमाम मरिदों-मस्तिजों की खुदाई का अभियान चलाना संविधान की सेवा नहीं है। संविधान समझदाहू है, लेकिन सरकार नहीं है। सरकार लगातार हिन्दू-मुसलमान का खेल खेलती आ रही है। सोमवार को राज्य सभा में भी यदि संविधान पर बहस हुई तो आप तय जा के भाषण का हा दाहराए। विसगत ये है कि संविधान को लेकर डीग हांकने वाले लोग वे हैं जिनकी मात्र संस्थाओं का, पूर्वज नेताओं का देश के संविधान के निर्माण में कोई योगदान नहीं रहा। वे तो दूसरे तरह का संविधान चाहते थे। यानि आज का संविधान आज की सरकार के मन का संविधान नहीं है। संविधान की प्रस्तावना ही आज की सरकार को पसंद नहीं है। आज की सरकार को पूर्व की सरकारों द्वारा किये गए संशोधन पसंद नहीं है। संसद में संविधान की प्रति का लहराना पसंद नहीं है, लेकिन दुर्भाग्य ये है कि सरकार के पास इतनी ताकत नहीं है कि वो विरासत में मिले संविधान को बदल सके। संसद में माननीयों के भाषण से ये जाहिर हो गया है कि आज की सरकार के लिए कल का संविधान केवल शपथ लेने की एक किताब है, लेकिन कोई भी संविधान में लिखे विधान का अनुशरण करना नहीं चाहता।

परिवर्तन की जगह आज का विश्व हिन्दू परिषद् तो गोया संविधान विरोधी संवाद से भी आगे बढ़कर आज का विश्व हिन्दू परिषद् तो गोया संविधान विरोधी संवाद तो देखे ताला पाक संघ बन चका है। इन्हिंनो इलाहाबाद फार्म कोर्ट के जण्ठिया शेखन

का ना हवा दज वाला एक नय बन पुका ह। इनादना इलाहाबाद हाई कोर्ट के जाएटस राय यादव द्वारा दिया गया एक हाइअसैबिनिक भाषण है जो कि गत 8 दिसम्बर को इलाहाबाद हाई कोर्ट के लाइब्रेरी हॉल में वीएचपी के विधि प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम तेरौन दिया गया था वह न केवल चर्चा में है बल्कि उसी भाषण को लेकर जस्टिस शेख यादव के विलद्ध महामियोग चलाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गयी है। वीएचपी के लीगल सेल के इसी आयोजन में जस्टिस शेखर यादव ने हासमान नागरिक संहिता एक सैबिनिक अनिवार्यता विषय पर बोलते हुए कहा था कि देश एक है



लेखक

स्तर के नेताओं का गढ़ हुआ करता था। नेहरू-गाँधी परिवार की तो यह कर्मस्थली थी ही इसके अतिरिक्त पुराणोंमें दस टंडन, मदन मोहन मालवीय जैसी अनेक विभूतियाँ भी इसी शहर से सम्पद्ध रहीं। इसी तरह दक्षिणपंथी विचारधारा के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख रहे राजेंद्र सिंह उर्फ रंजु भैया का नाम भी इलाहाबाद से ही जुड़ा हुआ है। ऐसा ही एक नाम था जस्टिस शिव नाथ काटजू का जोकि 1980 के दशक में विहिप के अध्यक्ष भी चुने गये थे। जस्टिस काटजू ने अयोध्या में विवादित बाबरी मस्जिद की जगह पर राम मंदिर के निर्माण के लिए शुरूआती अभियान चलाया था। और इसी दौरान उन्हें नजरबंद भी कर दिया गया था। चूँकि मेरी भी औपचारिक शिक्षा इलाहाबाद में ही हुई इसलिये उस दौर के अनेक विशिष्ट जनों के साथ संबंध रखने का भी सोभाग्य मिला। जस्टिस काटजू भी उन्हीं में एक थे जिनके पास अवसर मेरा आना जाना रहता था। जस्टिस काटजू विहिप के अध्यक्ष तो जरूर करबला की घटना जैसे विषयों पर तो वे अवसर मेरे साथ बातें किया करते और मेरा ज्ञान वर्धन किया करते थे। बात 1977-78 की है उस दौरान मैं इलाहाबाद के मुहल्ला दरियाबाद के इमामबाड़ा सलवात अली खान नामक एक ट्रस्ट से परिवारिक रूप से जुड़ा हुआ था। यहाँ अनेक धार्मिक अयोजन हुआ करते हैं। इन्हीं में एक चालीसवें का जुलूस (मुहर्रम के चालीस दिन बाद) भी इसी इमामबाड़े से निकला जाता है। इसी जगह से निकलने वाले चालीसवें के जुलूस का प्रारंभिक संबोधन करने के लिये जब मैंने जस्टिस काटजू से निवेदन किया तो वे खुशी खुशी तैयार हो गये। हालांकि उन्होंने अयोध्या में मंदिर के निर्माण के लिए शुरू हुये विहिप आंदोलन तथा दरियाबाद की घनी मुस्लिम आबादी को भी रेखांकित किया। परन्तु मेरे संपूर्ण सुरक्षा व शार्तपूर्ण अयोजन के आश्वासन के बाद वे कार्यक्रम से पूर्व स्वयं अपनी एजेंसेडर कार चलाकर बिल्कुल अकेले ही दरियाबाद पथरे। यहाँ दरियाबाद चौराहे पर मौजूद मेरे मौजूद समूह के बीच जस्टिस काटजू ने करबला की घटना का जिक्र करते हुये न केवल अपनी तरफ से बल्कि विश्व हिंदू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष होने की हैसियत से विहिप की तरफ से भी हजरत इमाम हुसैन व करबला के शहीदों को बड़ी भावपूर्ण शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित की। शेरवानी, टोपी और चूड़ीदार पैजामा जैसा परिधान प्रायः धारण करने वाले काटजू साहब सभी धर्मों का पूरा ज्ञान रखते थे तथा उन्हें समान भी देते थे। वे विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष होने के बावजूद सभी धर्मों में परस्पर मेल जोल व सद्ग्राव के पक्षधर थे। उन्हें उर्दू आरबी फारसी का भी पूरा ज्ञान था। यह था उस दौर के विश्व हिंदू परिषद का वह चेहरा जिससे भारत का गैर हिन्दू समाज कभी भयभीत नहीं होता था। उसके बाद जबसे गुजरात को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की प्रयोगशाला कहा जाने लगा तब से इसी विश्व हिंदू परिषद ने खुलकर इस्लाम व अल्पसंख्यकों के प्रति अपनी आक्रामकता दिखानी शुरू कर दी। इसी विश्व हिंदू परिषद देश में विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल पर अनेक आपाराधिक मुकदमे चल रहे हैं। इसी विश्व हिंदू परिषद ने योजनाबद्ध तरीके से गुजरात से शुरू कर कार्रोनकाल के दोरान देश के कई राज्यों में मुस्लिम दुकानदारों के प्रति नफरत फैलाकर उनसे सज्जी फल व अन्य सामान खरीदने के लिये हिन्दू समाज के लोगों को मना किया। सोधे शब्दों में मुस्लिमों का व्यवसायिक बहिष्कार करने की कोशिश की गयी। इसी विहिप ने हांसेटी बचाओ बहू लाओह नामक एक अभियान भी चलाया जिसके अंतर्गत किसी हिन्दू लड़के के मुस्लिम लड़के से प्रेम संबंध होने की स्थिति में उस रिश्ते में दखल देना तथा वह अंतर्राष्ट्रीक सम्बन्ध परवान न चढ़ने देना है। जबकि साथ ही हिन्दू लड़कों को इस बात के लिये आमादा करना है कि वे मुस्लिम लड़कियों से दोस्ती कर उनको बहू बनाकर लाएं। गुजरात सहित और भी कई राज्यों से ऐसी खबरें भी आती रही हैं जबकि विहिप के लोगों ने किसी मुस्लिम को किराये पर मकान विश्व हिंदू परिषद के लोग मुस्लिमों की मॉब लियांग करने वालों का साथ देते यहाँ तक कि उनके समर्थन में सड़कों पर उतरते, उग्र होते व हत्यारों को सम्मानित करते नजर आये। आज का विश्व हिंदू परिषद तो पूरी तरह से अपने 8 दिसंबर को इलाहाबाद हाई कोर्ट के लाइब्रेरी हॉल में वीएचपी के विधिप्रकोष्ठ द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान दिया गया था वह न केवल चर्चा में है बल्कि उसी भाषण को लेकर जस्टिस शेरवान यादव के विरुद्ध महाभियोग चलाने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गयी है। वीएचपी के लीगल सेल के इसी आयोजन में जस्टिस शेरवान ने हासमान नागरिकों को उद्देश्य हिंदू समाज को संगठित व मजबूत करना और हिंदू धर्म की सेवा और सुरक्षा करनाह था न कि किसी अन्य धर्म के विरुद्ध आक्रामक होना या भारतीय लोगों में अपवाहबाजी के द्वारा नफरत हिंसा व विद्वेष भड़काना और किसी भारतीय नागरिक को दूसरे दर्जे का नागरिक समझना। न ही किसी की मस्जिद मजार गिराना व अन्य धर्मों की ध्वजा उतारकर अपनी धर्मधर्वजा लहराना। न ही इस तरह के अभियान चलाना।

हेमेन्द्र क्षीरसागर

भारत ने पाकिस्तानी सत्ता और सेना के अत्याचार से पीड़ित पूर्वी पाकिस्तान की जनता को अपना सहयोग देकर बांग्लादेश के रूप में एक नए राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। 1971 का युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच एक सैन्य संघर्ष था जिसमें पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ी। इसका आरंभ पश्चिमी पाकिस्तान और तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान के बीच सशस्त्र संघर्ष के बीच 3 दिसंबर, 1971 को पाकिस्तान द्वारा भारतीय वायुसेना के 11 स्टेशनों ने विमानों को उड़ाने के दौरान हुए घटनाएँ देने के समर्थन देने के निर्णय के कारण हुआ। जिसमें पाकिस्तान को अप्रत्याशित पराजय का सामना करना पड़ा। इसमें भारतीय सेना द्वारा 93 हजार पाकिस्तानी सैनिक बंदी बना लिए गए और पूर्वी पाकिस्तान, पाकिस्तान के नियंत्रण से मुक्त होकर बांग्लादेश बन गया।

ये युद्ध भारत के लिए ऐतिहासिक युद्ध माना जाता है। इसीलिए देश भर में भारत की पाकिस्तान पर जीत के उपलक्ष में 16 दिसंबर को विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है।





जाने के परिणामस्वरूप भारतीय सेना पूर्वी पाकिस्तान में बांग्लादेश स्वतंत्रता संग्राम में बांगलाली राष्ट्रवादी गुटों के समर्थन देने के निणय के



में भारत और पाकिस्तान ने शिमला समझौता 1972 किया। इसके अंतर्गत बंदी बनाए गए पाकिस्तानी सैनिकों को वापस पाकिस्तान भेज दिया गया था।

भारत की पराक्रमी सेना के साहस ने पाकिस्तान की सेना के 97, 368 सैनिकों को आत्मसमर्पण के लिए बहलोल खान को जिरह-बखतर, घोड़े सहित काट डाला। रानी दुर्गाविता युद्ध के मैदान में घोड़े की लगाम मुँह में थाम कर दोनों हाथों में तलवार लेकर उतरी थीं और शत्रुओं को नाकों चरे चबबा दिए। छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी तलवार के बल पर अदिलशाही की दौड़ी देने के लिए अपनी जान दी।

विवाह किया। इस गौरवशाली दिवस पर स्वयं सेवकों के बल और सामर्थ्य में वृद्धि करने हेतु संघ प्रतिवर्ष 16 दिसम्बर को प्रहार ५ बजे अपनी शारीरिक उत्तमता के साथ निपटने के लिए उत्तराखण्ड की जगत् भूमि पर आया। विवाह के दौरान उत्तराखण्ड की जगत् भूमि पर आया। विवाह के दौरान उत्तराखण्ड की जगत् भूमि पर आया। विवाह के दौरान उत्तराखण्ड की जगत् भूमि पर आया।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर अत्याचार और नेपाल में प्रदर्शन

बढ़ती असहिष्णुता का गंभीर परिवृत्ति देखा गया

प्रातः किरण, संवाददाता

रक्सील। हाल के दिनों में बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों के खिलाफ बढ़ती हिंसा और उनके मठ-मंदिरों में तोड़फोड़ की घटनाओं ने एक बार फिर से धार्मिक असहिष्णुता के मुद्दे को उत्तरांग किया है। हिंदू समुदाय पर हो रहे इन हमलों के खिलाफ नेपाल ने वीरगंग में व्यापार नहीं हुआ। प्रदर्शनकारियों ने बांग्लादेश सरकार से हिंदू समुदाय की सुरक्षा सुनिश्चित करने और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।

नेपाल के बीच जंग में प्रदर्शन की शुरूआत मुख्य चूक से हुई, जो विभिन्न मार्गों से होते हुए जिला प्रशासन कार्यालय के समान सभा में तब्दील हो गई। इस दौरान नेपाल की सेना भारी संख्या में जुलूस के साथ सुरक्षा व्यवस्था बनारे रखने में सफल रही। हिंदू समाज के नेताओं ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे

हमलों को धार्मिक असहिष्णुता का स्पष्ट उदाहरण बताया और इसकी कड़ी निंदा की। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से भी इस मामले में हस्तक्षेप करने का आहारन किया। नेपाल हिंदू स्वयं सेवक संघ के विवाज कार्याचार प्रमुख रंजीत शाह ने कहा कि बांग्लादेश में कहरपंथियों द्वारा हिंदुओं के घरों, दुकानों और मरियादा को लगातार नियामन बनाया जा रहा है। उन्होंने बांग्लादेश सरकार से मांग की कि वह हिंदू समुदाय की सुरक्षा सुनिश्चित करने और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की।

नेपाल के बीच जंग में प्रदर्शन की शुरूआत मुख्य चूक से हुई, जो विभिन्न मार्गों से होते हुए जिला प्रशासन कार्यालय के समान सभा में तब्दील हो गई। इस दौरान नेपाल की सेना भारी संख्या में जुलूस के साथ सुरक्षा व्यवस्था बनारे रखने में सफल रही। हिंदू समाज के नेताओं ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे



कर दी गई, जिलकि 45 लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। बांग्लादेश की आवादी लगभग 17 करोड़ है, जिसमें हिंदू के बहल 8% हैं। ये अल्पसंख्यक मुख्य रूप से शेख हसीना की सेवकुलर आवामी लीग पार्टी के समर्थक रहे हैं, लेकिन महासचिव लालभी नारायण उर्फ पूर्ण गुप्ता ने कहा कि इस समस्या का शेख हसीना के सत्ता से हटने और देश छोड़ने के बाद, कहरपंथी ताकातों ने हिंसा का साहारा लिया है। बांग्लादेश के हिंदू समुदाय के लिए भारत की ओर भागने की कोशिश कर रहे हैं। बांग्लादेश-भारत सीमा पर सुरक्षा को दोषियों को नायक के कठघरे में लाने के लिए अंतरराष्ट्रीय दबाव अत्यंत आवश्यक है।

इन घटनाओं में कई घरों, दुकानों और मंदिरों को तोड़ा और लटा गया। हिंसा के दौरान एक स्कूल शिक्षक समेत कई लोगों को हत्या है। बांग्लादेश के हिंदू समुदाय के

लोग जान बचाने के लिए भारत की ओर भागने की कोशिश कर रहे हैं। बांग्लादेश-भारत सीमा पर सुरक्षा को दोषियों को नायक के कठघरे में लाने के लिए अंतरराष्ट्रीय दबाव अत्यंत आवश्यक है।

अंतरराष्ट्रीय हिंदू परिषद सह राष्ट्रीय बजरंग दल के जिला इकाई प्रमुख दिविजय पाथ ने बताया कि बांग्लादेश में हिंदू समुदाय पर हो रहे हमले के केवल धार्मिक असहिष्णुता का मामला नहीं है; यह एक अल्पसंख्यक समुदाय के अस्तित्व और उनके अधिकारों पर हमला है। नेपाल और अन्य पूर्णों दोनों में हो रहे हवेरिंग प्रदर्शन दिखाता है कि यह मुद्दा क्षेत्रीय अस्तित्व का बाराण बन सकता है। ऐसे में बांग्लादेश सरकार और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की संयुक्त कार्रवाई अत्यावश्यक है, किंतु धार्मिक सौहार्द और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकती है।

कोपा में नौ दिवसीय रामकथा व सतसंग के लिए निकला गया भव्य कलश यात्रा

कलश यात्रा में हाथी, घोड़ा, बैंड बाजा के साथ हजारों महिलाएं शामिल हुई



प्रातः किरण, संवाददाता

कोपा कोपा नगर पंचायत के दीखिना टोला राम-जानकी जोड़ा मंदिर पर चारों ओर हमला होते हुए विभिन्न मार्गों से होते हुए जिला इकाई प्रमुख दिविजय पाथ ने बताया कि बांग्लादेश में हिंदू समुदाय पर हो रहे हमले के केवल धार्मिक असहिष्णुता का मामला नहीं है; यह एक अल्पसंख्यक समुदाय के अस्तित्व और उनके अधिकारों पर हमला है। नेपाल और अन्य पूर्णों दोनों में हो रहे हवेरिंग प्रदर्शन दिखाता है कि यह मुद्दा क्षेत्रीय अस्तित्व का बाराण बन सकता है। ऐसे में बांग्लादेश सरकार और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की संयुक्त कार्रवाई अत्यावश्यक है, किंतु धार्मिक सौहार्द और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकती है।

बाल क्षण दास जी महाराज के द्वारा संगीतमयी श्री राम कथा का वाचन किया जाएगा। 24 दिसंबर को विशाल भड़ारा का भी आयोजन किया गया है। कलश यात्रा में कोपा काली मार्द चारों ओर हमला होते हुए कोपा थाना के समीप संकट मेचन मंदिर कोपा थाना पर हवेरिंग किया जाएगा। दो वीर, अखिलांश कुमार, कुमार, कुन्दन कुमार, ताके शवर साह, स्लीम खान, टडल प्रसाद, संतोष सिंह, प्रदीप महरो, राजु मिश्र, सारों सिंह, बुस्तामी खां, माधुरी सिंह, संतोष यादव, राजा प्रत्येक दिन दोपहर 2 बजे से संध्या सिंह, बलवंत सहित अन्त लोग मीजद थे।

स्वास्थ्य मंत्री ने किया अखंड ज्योति लैबस का शुभारंभ

कहा: पीएम नरेंद्र मोदी और सीएम नीतीश कुमार के सपने को साकार करने में जुटा है यह अस्पताल

अखंड ज्योति लैबस का शुभारंभ: विजन 2030 के लक्ष्यों को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम

प्रातः किरण, संवाददाता

जलालपुर / कोपा थाना क्षेत्र के कोपा बस स्टैंड से गुन सूचना के आधार पर कोपा थाना अध्यक्ष पिन्ड कुमार ने पौच्छ लिटर देशी शाराब के एक धैर्यवान को गिरफतार किया गिरफतार धैर्यवान कोपा चट्टानी विवासी अदालत मिया तथा गया किया थाना अध्यक्ष ने बताया कि एक झोला में शाराब लेकर धैर्यवान बस स्टैंड में ही खोड़ा था तभी गिरफतार कर लिया गया। अखंड ज्योति लैबस का शुभारंभ किया, जिसका उद्घाटन के मानी नीतीश कुमार के सपने में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है।

छपरा । का गार्डलाय। अखंड ज्योति लैबस का शुभारंभ किया जाएगा। अखंड ज्योति लैबस के लिए भारतीय स्वास्थ्य में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया जाएगा।

प्रातः किरण, संवाददाता

जलालपुर / कोपा थाना क्षेत्र के कोपा बस स्टैंड से गुन सूचना के आधार पर कोपा थाना अध्यक्ष पिन्ड कुमार ने पौच्छ लिटर देशी शाराब के एक धैर्यवान को गिरफतार किया गिरफतार धैर्यवान कोपा चट्टानी विवासी अदालत मिया तथा गया किया थाना अध्यक्ष ने बताया कि एक झोला में शाराब लेकर धैर्यवान बस स्टैंड में ही खोड़ा था तभी गिरफतार कर लिया गया। अखंड ज्योति लैबस का शुभारंभ किया, जिसका उद्घाटन के मानी नीतीश कुमार के सपने में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया जाएगा।

प्रातः किरण, संवाददाता

जलालपुर / कोपा थाना क्षेत्र के कोपा बस स्टैंड से गुन सूचना के आधार पर कोपा थाना अध्यक्ष पिन्ड कुमार ने पौच्छ लिटर देशी शाराब के एक धैर्यवान को गिरफतार किया गिरफतार धैर्यवान कोपा चट्टानी विवासी अदालत मिया तथा गया किया थाना अध्यक्ष ने बताया कि एक झोला में शाराब लेकर धैर्यवान बस स्टैंड में ही खोड़ा था तभी गिरफतार कर लिया गया। अखंड ज्योति लैबस का शुभारंभ किया, जिसका उद्घाटन के मानी नीतीश कुमार के सपने में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया जाएगा।

प्रातः किरण, संवाददाता

जलालपुर / कोपा थाना क्षेत्र के कोपा बस स्टैंड से गुन सूचना के आधार पर कोपा थाना अध्यक्ष पिन्ड कुमार ने पौच्छ लिटर देशी शाराब के एक धैर्यवान को गिरफतार किया गिरफतार धैर्यवान कोपा चट्टानी विवासी अदालत मिया तथा गया किया थाना अध्यक्ष ने बताया कि एक झोला में शाराब लेकर धैर्यवान बस स्टैंड में ही खोड़ा था तभी गिरफतार कर लिया गया। अखंड ज्योति लैबस का शुभारंभ किया, जिसका उद्घाटन के मानी नीतीश कुमार के सपने में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया जाएगा।

प्रातः किरण, संवाददाता

जलालपुर / कोपा थाना क्षेत्र के कोपा बस स्टैंड से गुन सूचना के आधार पर कोपा थाना अध्यक्ष पिन्ड कुमार ने पौच्छ लिटर देशी शाराब के एक धैर्यवान को गिरफतार किया गिरफतार धैर्यवान कोपा चट्टानी विवासी अदालत मिया तथा गया किया थाना अध्यक्ष ने बताया कि एक झोला में शाराब लेकर धैर्यवान बस स्टैंड में ही खोड़ा था तभी गिरफतार कर लिया गया। अखंड ज्योति लैबस का शुभारंभ किया, जिसका उद्घाटन के मानी नीतीश कुमार के सपने में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया जाएगा।

प्रातः किरण, संवाददाता

जलालपुर / कोपा थाना क्षेत्र के कोपा बस स्टैंड से गुन सूचना के आधार पर कोपा थाना अध्यक्ष पिन्ड कुमार ने

